“Harappan Pottery”

Mandip kumar chaurasiya

Assistant professor(Guest)

Department of A.I.H. & Archaeology

Patna university, patna-800005

M.A. Semester - III

Paper/CC – 11 Pre and Proto History of India and Ancient Potteries

हड़प्पीय सभ्यता के सभी केन्द्रों से मिट्टी से बने अधिकांश पात्र चाक पर निर्मित हैं। अधिकांश पात्र चाक पर निर्मित हैं, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि सिर्फ चाक पर ही निर्मित पात्र पाए गए है यधपि हस्त–निर्मित यानि हाथ से बनाये गए पात्र भी प्राप्त हुए हैं। अधिकांश पात्र नदी के ताल से लाई गई चिकनी मिट्टी से बनाये गए हैं। इतिहासकार सतीशचंद्र काला के अनुसार यह मिट्टी निकटवर्ती स्थानों से लाई जाती होगी। मिट्टी में बालू या चूना या दोनों को ही मिलाया गया है। कभी–कभी अभ्रक का भी प्रयोग किया जाता था। ये पात्र हाथ से चलाए जाने वाले चाक से बनाए गए है। संभवतः पैर से चलाने वाले चाक का भी प्रयोग होता था। किन्तु यह सुनिश्चित नहीं है। विद्वानों का विचार है कि पैर से चलाए जाने वाले चाक यूनानियों अथवा पार्थियनों द्वारा भारत लाये गए थे। इलम, ईरान, मिस्र या सुमेरिया से भी चाक आने का विचार अनेक विद्वानों ने व्यक्त किया

है। चाक पर बनाने के बाद इन पात्रों को सुखा कर आग में पकाया जाता था। पात्र पकाने के कुछ आँवें यानि की चूल्हे भी प्राप्त हुए हैं। ये गोलाकार हैं। गुम्बद शैली के कुछ आँवों की तली में एक बड़ा सा छिद्र बना है, जहाँ से राख आदि निकाली जाती होगी। मोहनजोदड़ो से एक ही स्थान से छः आवें मिलें है। पिगेट के अनुमान से यहाँ कुम्हारों का आवास रहा होगा। पात्रों के आकर का निर्माण करने में उनके उपयोग को ध्यान में रखा गया हैं, हालांकि कुछ पात्र कुम्हारों की कल्पनाशीलता के परिचायक भी है। पकाने के बाद ये पात्र हल्के या गाढे लाल रंग के हो गए हैं। कभी-कभी इनका रंग नीला जैसा भी हो गया है। नीला रंग बनाने के लिए संभवतः कोई अन्य पदार्थ मिलाया जाता होगा। नीले पात्रों पर कभी-कभी काले रंग की पाँलिश कर दी गई है। कुछ विशेष पात्रों पर हल्के लाल या पीले रंग की पतली पाँलिश भी की गई हैं। कत्थई रंग के पात्र भी मिले है। पात्र पर रंग लगाने के बाद उसे घिसा जाता था ताकि ऊपर चमक आ जाए। हाथ से बने पात्रों पर भी रंग लगाया गया है किन्तु उन्हें रगड़ कर चमकाया नहीं गया है। पतली गढ़न के पत्रों को बनाने के लिए हल्के लाल रंग की मिट्टी का प्रयोग किया जाता था।

सैन्धव पात्र-परम्परा में सादे एवं चित्रित दोनों प्रकार के पात्र प्राप्त हुए हैं। प्रायः काले रंग से चित्रण बनाये गए हैं। कभी-कभी द्विरंगी और बहुरंगी अलंकरण भी मिले हैं। इस प्रकार के पात्र चन्हुदडो, आमरी, लोथल, रंगपुर, रुपड, रानाघुंडई, पेरियानो घुंडई, पश्चिम एशिया, किश, उर, बाबल, जमतेद नासर आदि से मिले है यधपि इनकी संख्या काफी कम हैं। ये चित्रण पात्र को पकाने से पहले ही बना दिए गए थे और फिर उनको घिसा गया था। घिसने का कार्य हड्डी या प्रस्तर-खण्ड से किया जाता था। पात्र को घिस देने से वे

चमकीले व चिकने हो जाते थे और इनसे पानी भी नहीं टपकता था। चित्रण बनाने के लिए गेरू, हरताल, ताम्बा और लोहा आदि खनिज पदार्थों का प्रयोग किया जाता था। चित्रणों में वृक्ष, पत्ती, दुपतिया, तिपतिया, एक दुसरे को काटते वृत्त उल्लेखनीय हैं। वृक्षों में पीपल, शमी, नीम, केला, खजूर और सरकंडे का अलंकरण प्रमुख हैं। ज्यामितीय अलंकरण भी बनाए गए हैं जैसे दो वृत्त के बीच में बिंदु, डमरू के आकार की जाली, रेखाएँ, अंग्रेजी अक्षर टी(T), चौपड़, कोण, तारे, बिंदु, त्रिभुज, शतरंज की बिसात आदि। मानव की आकृतियाँ विभिन्न रूपों में चित्रित की गई हैं। चित्रणों में बुनाई, गुब्बारा, स्वास्तिक, फेफड़े की आकृति, विभिन्न प्रकार के पात्र भी बनाए गए हैं। पात्रों पर कुम्हारों के चिह्न और मुद्रा छापें भी अंकित हैं, जो संभवतः स्वामियों के नाम होंगे। कुछ पात्रों की पेंदी में फफोले जैसे बने हैं। इन्हें 'बर्बोटाइन पात्र' कहा गया हैं।

पात्र-प्रकारों में थालियाँ, तस्तरियाँ, तसले, फलपात्र, हांडियाँ, ढक्कन, शलगम के आकार की नाद, कटोरदान, बड़े और माध्यम आकर के मटके, बेलनाकार पात्र, गाजर के आकार के पात्र, छिद्रित पात्र, संकरें मुँह वाले छोटे कलश, इत्रदान, आनार के आकार के पात्र, अनाज नापने के पात्र आदि उल्लेखनीय हैं। विशाल संग्रह पात्र भी मिलें हैं जिनमे आनाज का संग्रह किया जाता होगा।

इस प्रकार सैन्धव या हड़प्पीय पात्र-परंपरा अपने आप में उच्चकोटि की हैं और वहाँ के कुम्हारों के उत्कृष्ट तकनीक ज्ञान की परिचायक है।